शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मुंशी प्रेमचंद की कहानियों में भारतीय किसान

सुनीता देवी
चौधरी मनीराम गोदारा राजकीय महिला महाविद्यालय
कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी
भोड़िया खेड़ा, फतेहाबाद हरियाणा, भारत

शोध संक्षेप

हिन्दी कहानी एक ऐसी विधा है जो जीवन की परिस्थितियों को अपने में लेकर उलझी हुई समझ को सुलझा देती है। हिन्दी कहानी हमारे व्यक्तित्व को एक दर्पण की भाँति हमारे सामने प्रेषित करती है, जिनसे हमें अपने कर्मों का बोध होता है। आदमी की दुखद अनुभूति ही कहानी बनकर सामने आती है। प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के महान कथा सम्राट थे। इन्होंने अपनी रचनाओं में मजदूर वर्ग, ग्रामीण, शहरी, कृषक वर्ग, सर्वहारा पूँजीपति वर्ग, षिक्षित व अषिक्षित सभी वर्गों के समाज का चित्रण किया है। इन्होंने न केवल अपने युग के पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक जीवन को साहित्य में अभिव्यक्त किया अपितु किसानों की खेती से संबंधित समस्याओं पर भी प्रकाश डाला है। इन्होंने अपने कथा साहित्य में किसानों की गरीबी, अंधविश्वास, उनके दुःख दर्द, विवशता, उन पर होने वाली जोर जबरदस्ती, आपसी वैमनस्य आदि का वर्णन किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

प्रेमचन्द महानतम भारतीय लेखकों में से एक हैं। इन्हें हिन्दी साहित्य का कथानायक और उपन्यास सम्राट कहा जाता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य पर प्रेमचन्द का बड़ा ही व्यापक प्रभाव है। इनका साहित्यिक जीवन 1901 से ही शुरू हो गया था। इनकी लेखकीय साधना कहानी लेखन से ही आरम्भ हुई। पहले पहल ये नवाबराय के नाम से लिखते थे। प्रेमचन्द का पहला कहानी संग्रह 'सोजेवतन' अर्थात 'राष्ट्र का विलाप' नाम से प्रकाशित हुआ, लेकिन देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत होने के कारण अंग्रेज सरकार ने इसे जब्त कर ली, उसके बाद अंग्रेजों के उत्पीड़न के कारण वे 'प्रेमचन्द' नाम से लिखने लगे। प्रेमचन्द ने हंस, मर्यादा, जागरण तथा माधुरी जैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं का संपादन किया। प्रेमचन्द ने हिन्दी कहानी को एक नयी पहचान व नया जीवन दिया। प्रेमचंद आधुनिक कथा साहित्य के जन्मदाता कहलाए। प्रेमचन्द की लिखी कहानियों की संख्या 300 से अधिक हैं, जो मानसरोवर के आठ भागों में प्रकाशित है।

भारतीय किसान परम्परा

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का केन्द्र बिन्दु है। भारत की लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर करती है। स्वतन्त्रता के बाद कृषि को देष की आत्मा के रूप में स्वीकार करते हुए और खेती को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करते हुए देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने स्पष्ट किया था कि "सब कुछ इन्तजार कर सकता है, मगर खेती नहीं। जब सूखा पड़े या बाढ़ आई हो, बेमौसमी बरसात हो या ओलावृष्टि हो जिसकी सबसे अधिक मार किसानों को ही झेलनी पड़ती है। खेती से आमदनी कम हो जाती है और

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

किसानों पर कर्ज का बोझ बढ़ जाता है। किसान मानसिक रूप से आहत होकर आत्महत्या करने पर मजबूर हो जाता है जिनमें अधिकतर छोटे कृषक ही होते हैं। आमतौर पर जमींदार या बड़े कृषक तो बैंको के ऋण डकार जाते हैं, अपना राजनीतिक दवाब बनाकर निकल जाते हैं। जो छोटे व मझोले किसान है, वे बैंकों तथा साहूकारों के दबाव से नहीं उबर पाते।

प्रेमचन्द की कहानियों में किसान

प्रेमचन्द का साहित्य सहजानुभूति का साहित्य है जिसमें मानव जीवन की गहराई छिपी है। उनके साहित्य को पढ़कर यह स्पष्ट हो जाता है कि उनमें मानव जीवन को गहराई से देखने की दृष्टि विद्यमान थी जीवन समस्याओं का नाम है और साहित्य मानव के संस्कारों से जुड़कर समस्याओं का वर्णन करता है। प्रेमचन्द का जीवन ग्रामीण परिवेश में बीता। प्रेमचन्द के मन में संघर्षरत किसान और मजदूर वर्ग सदैव विद्यमान रहा। किसानों के बीच चलने वाले तरह-तरह के भाव, उनके राग-द्वेष, दुख औ संघर्ष के प्रत्येक दृश्य को प्रेमचन्द ने कहानियों में लाने की चेष्टा की। कृषक जीवन का संभवत ही कोई पक्ष उनसे अछूता रहा हो। प्रेमचन्द की कहानियों में विषय वैविध्य दिखाई पड़ता है। किसी अन्य कथाकार ने जीवन के इतने व्यापक फलक को अपनी कहानियों में नहीं समेटा जितना प्रेमचंद ने। प्रेमचन्द की कहानियों का विषय ग्रामीण जीवन से लिया गया है, किन्तु कई कहानियाँ कस्बे की जिन्दगी या स्कूल कॉलेज से भी जुड़ी हुई हैं। कहानियों के पात्र हर वर्ग, धर्म, जाति के हैं, कोई हिन्दू है तो कोई मुसलमान, कोई किसान है तो कोई विद्यार्थी। कहानियों में विविध समस्याओं को उठाया गया है। जमीदारों के द्वारा किसानों के शोषण की समस्या, सूदखोरों के शोषण से पिसते ग्रामीणों की समस्या, भ्रष्टाचार एवं व्यक्तिगत जीवन की समस्या आदि। समाज के सभी वर्गों की अपेक्षा किसानों के चित्रण में सर्वाधिक सफलता मिली। किसानों का इतना बड़ा हितैषी हिन्दी साहित्य में दूसरा कोई नहीं होगा। प्रेमचन्द ने मंदिरों, मठो में ईश्वर के नाम से होने वाले अत्याचार महाजन और जमींदारों से आहत किसानों का अपनी जमीन, खेत-खलिहान, घर की मर्यादा के लिए संघर्ष का जीता जागता प्रभावषाली वर्णन अपनी कहानियों में किया है। प्रेमचन्द के हृदय में भारत के दीन-हीन किसानों के प्रति सहानुभूति थी। वे किसानों के दुख-दर्द, लाचारी, आर्थिक दुर्दशा से परिचित थे। वे भारतीय किसानों का हृदय से भला चाहते थे। लेकिन देश में अंग्रेजी राज होने के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था का सन्तुलन नष्ट हो गया। कृषि पर निरन्तर बोझ बढ़ता गया फलस्वरूप किसानों की दशा अत्यन्त शोचनीय हो गई। प्रेमचन्द आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानीकार थे। इनका आदर्शवाद यथार्थ की पृष्ठभूमि पर आधारित है। प्रेमचन्द के शब्दों में - 'संसार से अन्याय, अत्याचार, पाखंड, असमानता आदि का उन्मूलन होकर मानव मात्र सुखी बन सके।

प्रेमचन्द का साहित्य अंग्रेजी साम्राज्यवाद से मुक्ति हेतु जनता के संघर्ष का साहित्य की नहीं बल्कि सामंतवादी पूँजीवादी तन्त्र के शोषण, उत्पीड़न से त्रस्त किसानों, मजदूरों, दलितों और स्त्रियों की मुक्ति की कामना तथा संघर्ष का जीवन्त दस्तावेज भी है।

'सवा सेर गेहूँ' कहानी में शंकर किसान गांव के विप्र महाराज से सवा सेर गेहँू उधार लेता है विप्र महाराज साल में दो बार खलिहानी लिया करते थे। शंकर ने दिल में कहा, सवा सेर गेहूँ

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

इन्हें क्या लौटाऊँ, पंसेरी बदले कुछ ज्यादा खलिहानी दे दूँगा। चैत में जब विप्र जी पहुँचे तो उन्हें डेढ़ पंसेरी के लगभग गेहूँ दे दिया तथा अपने को उऋण समझकर उसकी कोई चर्चा न की लेकिन सरल शंकर को क्या मालूम था कि यह सवा सेर गेहूँ चुकाने के लिए मुझे दूसरा जन्म लेना पड़ेगा। सात वर्ष बाद सवा सेर गेहूँ ब्याज सहित साढ़े पाँच मन हो जाता है। जब शंकर उसका ऋण नहीं चुका पाता तो विप्र महाराज उसे सूद में अपने यहाँ मजदूरी पर रख लेते है। इस प्रकार सवा सेर गेहूँ की बदौलत उम्र-भर के लिए शंकर को गुलामी की बेड़ी पैरों में डालनी पड़ी। प्रेमचन्द ने इस कहानी में गाँवों में होने वाली महाजनी लूट का चित्रण किया है। धार्मिक अंधविश्वास द्वारा पोषित अस्पृश्यता हिन्दू समाज की एक भंयकर बीमारी है। प्रेमचन्द ने अपनी रचनाओं में इस अमानवीय भावना को दूर करने तथा अछूतो में स्वाभिमान की चेतना जगाने का भरपूर प्रयास किया है।

'पूस की रात' कहानी का नायक ठंड से कड़कड़ाती जिस रात में बेसुध पड़ा है। यह कृति के भीतर रची गई एक अनन्त रात्रि है। नींद में बीतता उसका संयम बाहर के समय को अर्थहीन बना देता है। प्रेमचन्द प्रस्तुत कहानी में यह बताते हैं, भूख जीवन का सबसे बड़ा सच है। उच्चवर्ग और मध्यवर्ग के लोगों के आचार-विचार और व्यवहारों के प्रति प्रेमचन्द कुंठित है। जमींदार व सम्पन्न वर्ग अनेक दुर्गुणों से युक्त हो चुका है। धार्मिक अंधविश्वासों और जनश्रृद्धा के धार्मिक ठेकेदार बने पुजारी ऐसे गरीब किसानों का शोषण कर रहे है जैसे समाज के प्रति उनका कोई दायित्व नहीं रह गया था। हल्कू मर-मर कर खेतों में काम करता है, लेकिन वह अपनी आय से लगान नहीं चुका पाता। खेत के चरे जाने की आहट पाकर भी उसे अपनी जगह से हिलना जहर लग रहा था। खेती के नष्ट हो जाने पर वह यह सोचकर खुश होता है कि रात की ठंड में उसे खेत में नहीं सोना पड़ेगा।

'कफन' कहानी में घीसू और माधव कामचोर हैं। बुधिया के लिए कफन खरीदने के बदले शराब पीने में पैसे खर्च कर डालते हैं। फटे चीथड़ों से अपनी नग्नता को ढाँके हुए जिये जाते थे। संसार की चिन्ताओं से मुक्त ! कर्ज से लदे हुए। माधव बोला-लाश उठाते-उठाते रात हो जाएगी। रात को कफन कौन देखता है।

कफन लाश के साथ जल ही तो जाता है। अन्त में नशे में गाते हैं, "ठगिनी, क्यों नैना झमकावे।" प्रेमचन्द ने हिन्दुस्तान की गरीबी को अपनी रचनाओं में दर्शाया है। ग्रामीण महाजन किसानों को बहुत कड़ी सूद पर कर्ज देते हैं। जमींदार और साहूकार ही नहीं, सरकारी कर्मचारी, पुलिस, पटवारी, पंच, पुरोहित भी किसानों के शोषण चक्र में पीछे नहीं रहते।

'बलिदान' कहानी का जंमीदार ओंकारनाथ हरखू की मृत्यु के बाद उसके खेत उसके पुत्र गिरधारी को नहीं जोतने देता क्योंकि दूसरा असामी दस रूपये बीघा लगान और सौ रूपये नजराने का अलग से देने को तैयार है।

'मुक्तिमार्ग' कहानी में प्रेमचन्द ने किसानों के पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष के कुपरिणाम का वर्णन किया है। कहानी में झींगुर और बुद्ध का पारस्परिक वैमनस्य पूरे गाँव को विपत्ति में डाल देता है। बुद्ध झींगुर के खेत में आग लगा देता है। झींगुर के साथ-साथ पूरे गाँव की ऊख जलकर भस्म हो जाती है। प्रेमचन्द के शब्दों में - "केले को काटना इतना आसान नहीं, जितना किसान से बदला लेना। उसकी सारी कमाई खेतों में रहती है या खलिहानों में।"

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'विध्वंस' कहानी में भुनगी को जमींदार उदयभानू के दाने बेगार में भुनने पड़ते है। जब संक्रान्ति पर्व पर भुनगी समय पर जमींदार के दाने नहीं भून पाती तो जमींदार उसका भाड़ खुदवा डालता है। जमींदार अपने गाँव में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को बिना पैसों के गुलाम समझता है।

'उपदेश' कहानी में भी प्रेमचन्द ने इस तथ्य की ओर संकेत किया है कि किसानों की समस्याओं से परिचित होने के लिए तथा उन्हें कर्मचारी वर्ग के अत्याचारों से बचाने के लिए जमींदार को गाँव में ही रहना होगा। पंडित देवरत्न की गणना कहानी में देश सेवकों में की जाती है।

प्रेमचन्द व्यंग्य करते है कि, "कृषि सम्बन्धी विषयों से उन्हें विशेष प्रेम था। पत्रों में जहाँ कहीं किसी नयी खाद या किसी नवीन आविष्कार का वर्णन देखते, तत्काल उस पर लाल पेन्सिल से निशान कर देते। किन्तु शहर से थोड़ी दूरी पर उनका बड़ा ग्राम होने पर भी, वह अपने किसी असामी से परिचित न थे। यहाँ तक कि कभी प्रयाग के सरकारी कृषि क्षेत्र की सैर करने न गए थे।"

कहानी 'जेल' में प्रेमचन्द ने किसानों पर की जाने वाली जोर जबरदस्ती को उकेरा है। मृदुला कहती है कि "देहातों में आजकल संगीनों की नोक पर लगान वसूल कर रहे है। किसानों के पास रूपये है नहीं दे तो दे कहाँ से। गरीब किसान लगान कहाँ से दे।

'घासवाली' कहानी में जब चैन सिंह मुलिया का हाथ पकड़ता है तो मुलिया का वह फूल सा खिला चेहरा ज्वाला की तरह दहक उठा। ठाकुर चैन सिंह को आज जीवन में एक नया अनुभव हुआ-नीची जातों में रूप-माधुर्य का इसके सिवा और काम ही क्या है कि वह ऊँची जातवालों का खिलौना बने। मुलिया इसका विरोध करती है। इस प्रकार मुलिया सोचने पर मजबूर हो जाती है कि अगर वह इतनी गरीब न होती, तो किसी की क्या मजाल थी कि इस तरह उसका अपमान करता। गरीबी की दशा में भी वह अपने पति का साथ नहीं छोड़ती।

'पंच परमेश्वर' कहानी में जब खाला अलगू को पंचायत में आने को कहती है तो अलगू कहता है कि अलगू कहता है कि मुझे बुलाकर क्या करोगी। यो आने को आ जाऊँगा मगर पंचायत में मुँह न खोलूँगा। खाला ने कहा कि क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे। अब जुम्मन के मन मित्र की कुटिलता आठों पहर खटका करती थी। उसे हर घड़ी यही चिन्ता रहती थी कि किसी तरह बदला लेने का अवसर मिले। अन्त में जुम्मन अलगू के गले लिपटकर बोला कि जब से तुमने मेरी पंचायत की तब से मैं तुम्हारा प्राण घातक शत्रु बन गया था, पर आज मुझे ज्ञात हुआ कि पंच के पद पर बैठकर न कोई किसी का दोस्त होता है न दुश्मन। न्याय के सिवा उसे और कुछ नहीं सूझता। आज मुझे विश्वास हो गया कि पंच की जबान से खुदा बोलता है।

निष्कर्ष

प्रेमचन्द किसानों के हितैषी थे। उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों में भारतीय किसानों की परिस्थितिजन्य विवशता को पूरी तरह उभार दिया है। किसानों की दुर्दशा का मूल कारण आर्थिक अभाव, महाजनी शोषण व जमींदारी प्रथा रही है। प्रेमचन्द के शब्दों में - जब तक संपत्ति मानव समाज के संगठन का आधार है। संसार में अन्तर्राष्ट्रीयता का प्रादुर्भाव नहीं हो सकता। राष्ट्र से राष्ट्र की, भाई की भाई से, स्त्री की पुरूष से लड़ाई का कारण यही सम्पति है। संसार में जितना अन्याय व अनाचार है जितना द्वेष व मलिनता है, जितनी मूर्खता व अज्ञानता है उसका मूल यही विष की गाँठ है। जब तक सम्पति पर

व्यक्तिगत अधिकार रहेगा, तब तक मानव समाज का उद्धार नहीं हो सकता। मजदूरों के काम का समय घटाएं, बेकारों को गुजारा दे, जमींदारों और पूँजीपतियों के अधिकारों घटाए, मजदूरों और किसानों के स्वत्वों को बढायें इस तरह के चाहे जितने सुधार आप करे लेकिन यह जीर्ण दीवार इस तरह के टीपटाप से नहीं खड़ी रह सकती। इसे नए सिरे से गिराकर उठाना होगा।

संदर्भ ग्रन्थ

1. *कलम का सिपाही, मुंशी प्रेमचन्द, प्रो. दुर्गेशनन्दिनी*
2. *आधार चयन: कहानियाँ - राजकुमार राकेष*
3. *मानसरोवर - भाग-1 प्रेमचन्द*
4. *मानसरोवर - भाग-3 प्रेमचन्द*
5. *मानसरोवर - भाग-4 प्रेमचन्द*
6. *मानसरोवर - भाग-7 प्रेमचन्द*
7. *मानसरोवर - भाग-8 प्रेमचन्द*
8. *प्रतियोगिता साहित्य सीरीज*